

सर्वभोगी वि. (तत्.) 1. सभी प्रकार का भोग और आनंद लेने वाला 2. सब कुछ खा लेने वाला।

सर्वमंगला वि. (तत्.) 1. सब प्रकार का मंगल करने वाली, कल्याणकारिणी 2. देवी दुर्गा 3. लक्ष्मी 4. पार्वती।

सर्वमय वि. (तत्.) जिसमें संपूर्ण विश्व समाया हो, ईश्वर, परमात्मा जिसमें सभी समाविष्ट, अंतर्भूत हों, विश्वमय।

सर्वमान्य वि. (तत्.) जिसे सभी लोग मानते हों सभी को मान्य, सर्व-स्वीकार्य।

सर्वमूषक पुं. (तत्.) सब को मूषने या ले जाने वाला, काल, मृत्यु।

सर्वमेध पुं. (तत्.) 1. सार्वजनिक सभा 2. एक प्रकार का सोम यज्ञ।

सर्वयोगी पुं. (तत्.) शिव का एक नाम, सर्वयोगिनी।

सर्वरत्नक पुं. (तत्.) जैन पुराणों की नौ निधियों में से एक।

सर्वरस पुं. (तत्.) 1. जो सभी विद्याओं या विषयों का अच्छा ज्ञाता हो 2. राल, धूना 3. नमक 4. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सर्व-रसा स्त्री. (तत्.) आयु. धान की खेती का मांड।

सर्वरूप वि. (तत्.) 1. जो सब रूपों में हो, सर्वरूप, विश्वरूप जो सभी रूपों में वर्तमान या व्याप्त हो 2. एक प्रकार की समाधि।

सर्वलोकेश पुं. (तत्.) 1. संपूर्ण ब्रह्मांड के मालिक 2. ब्रह्मा 3. विष्णु 4. शिव 5. कृष्ण।

सर्वलोचना स्त्री. (तत्.) एक प्रकार का औषधीय पौधा।

सर्वलौह पुं. (तत्.) 1. तांबा, ताम्र 2. तीर, बाण।

सर्ववर्तुल वि. (तत्.) जिसका प्रत्येक बिन्दु उसके मध्य बिन्दु से समान अंतर पर हो। गोल, गोलाकार।

सर्ववल्लभा स्त्री. (तत्.) कुलटा या पुश्चली, व्यभिचारिणी स्त्री।

सर्ववाद पुं. (तत्.) सर्व ईश्वरवाद सभी ईश्वरों, देवों में भक्ति का भाव, सर्वदेववाद।

सर्ववास पुं. (तत्.) शिव का एक नाम।

सर्वविद् वि. (तत्.) 1. सर्वज्ञ, सभी का ज्ञाता 2. ईश्वर, परमात्मा। 3. ओंकार।

सर्ववैनाशिक वि. (तत्.) आत्मा आदि सभी को नाशवान मानने वाला।

सर्वव्यापी वि. (तत्.) 1. जो सर्वत्र एवं सभी जड़ चेतन में व्याप्त, विद्यमान हो 2. ईश्वर 3. शिव।

सर्वशः अव्य. (तत्.) 1. पूरा, पूरी तरह से 2. सभी दृष्टियों से 3. अपने पूर्ण रूप में।

सर्वशक्तिमान वि. (तत्.) जिसमें सारी शक्ति विद्यमान हो, ईश्वर, परमात्मा, जो सब कुछ करने में सक्षम हो।

सर्वशास्त्र निष्णात वि. (तत्.) सभी शास्त्रों का विद्वान, सभी शास्त्रों का कुशल ज्ञाता।

सर्वशास्त्रसम्मत वि. (तत्.) जिसे सभी शास्त्र मानते हों, मान्यता देते हों। सभी शास्त्रों के अनुरूप हो अथवा जिसकी सभी शास्त्र स्वीकृति देते हों।

सर्वशून्यवादी पुं. (तत्.) बौद्ध धर्म को मानने वाला, बौद्ध, जो यह मानते हैं कि विश्व की उत्पत्ति शून्य से होती है और शून्य में ही विलीन हो जाती है।

सर्वशोषी वि. (तत्.) 1. सबका पोषण करने वाला 2. सब कुछ सोख लेने वाला।

सर्वश्राव्य वि. (तत्.) 1. सभी के सुनने योग्य 2. जो सभी को सुनाई पड़े।